



नेतृत्व प्रभावशीलता में भावात्मक बुद्धिमता की भूमिका

डॉ. अल्पना शर्मा, शोध निर्देशक, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
अर्चना शर्मा, शोधार्थी, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

सारांश

भावात्मक बुद्धिमता ऐसे नेताओं का निर्माण करती है जो जवाब देह, आत्म जागरूक, भरोसेमंद रिश्तों को महत्व देते हैं और बढ़ावा देते हैं, और सबसे सकारात्मक तरीकों से भावनाओं को समझते हैं और नियंत्रित करते हैं बुद्धि लब्धि के कारण हो किसी की अपने जीवन में सफलताएँ एवं उपलब्धियाँ प्राप्त होती है लेकिन आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि व्यक्ति को अपने जीवन में जो सफलताएँ मिलती है उसका 20% ही बुद्धि लब्धि के कारण होता है और 80% सांवेगिक लब्धि के कारण होता है बुद्धि से संज्ञानात्मक योग्यता का बोध होता है।

नेतृत्व का मतलब सिर्फ एक टीम का मार्गदर्शन करना या रणनीतिक निर्णय लेना नहीं प्रभाव नेतृत्व स्वयं और दूसरों की गहरी समझ में निहित है जिसमें सांवेगिक बुद्धि या भावात्मक बुद्धिमता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज के गतिशील कारोबारी माहौल में, उच्च भावनात्मक बुद्धिमता वाले नेताओं के सफल होने की अधिक संभावना है उच्च स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले नेता अपनी टीमों के साथ जुड़ सकते हैं बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढल सकते हैं और ऐसे निर्णय ले सकते हैं जो तथ्यों और भावनाओं दोनों पर विचार करते हैं।

भावनात्मक रूप से बुद्धिमान नेता एक खुली और समावेशी संस्कृति बनाते हैं एक कुशल नेता निर्णय लेते समय तथ्यों और भावनाओं दोनों पर विचार करते हैं उच्च ई आई नेता अपनी टीम के सदस्यों के साथ मजबूत संबंध बनाते हैं। भावात्मक बुद्धि एक श्रेष्ठ नेतृत्व के लिए अति आवश्यक है। नेतृत्व के संदर्भ में भावात्मक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण घटक है दबाव की स्थिति से निबटना यदि यह योग्यता हो तो निश्चय है मिलेगा। भावात्मक योग्यता है अपनी भावनाओं का सही उपयोग करते हुए सफल नेतृत्व करना।

तकनीकी शब्दावली— नेतृत्व, बुद्धि, भावनात्मकता प्रभावशीलता, भूमिका